IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, July 2026
Impact Factor: 8.2

अनूप–अशेष के नवगीतों में संवेदना के विविध आयाम

डॉ. राजेन्द्र द्विवेदी एवं पूनम सिंह

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी), शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना (म.प्र.)

शोधार्थी (हिन्दी), शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना (म.प्र.)

शोध सारांश :–

प्रस्तुत शोध पत्र समकालीन नवगीत के परिदृश्य में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले रचनाकार अनूप–अशेष के गीतों में अंतर्निहित संवेदना के विविध आयामों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है। नवगीत विधा जहाँ एक ओर पारंपरिक छंदबद्धता को आधुनिक बोध से जोड़ती है, वहीं अनूप–अशेष के नवगीत इस विधा को एक नई वैचारिक और भावुक गहराई प्रदान करते हैं। इस अध्ययन के अंतर्गत उनके गीतों में व्याप्त उत्तर–आधुनिक विसंगतियों, महानगरीय अकेलेपन, टूटते हुए मानवीय मूल्यों और लोक–संस्कृति के प्रति गहरी आत्मीयता का विश्लेषण किया गया है। शोध पत्र यह रेखांकित करता है कि उनकी संवेदना केवल व्यवस्था के प्रति आक्रोश तक सीमित नहीं है बल्कि उसमें आम आदमी के संघर्ष, जिजीविषा और प्रकृति के बदलते स्वरूप के प्रति एक गहरी छटपटाहट भी है। उनकी भाषा सरल, बिम्बात्मक और प्रतीकात्मक है जो सीधे पाठक के मर्म को छूती है। इस प्रकार शोध पत्र यह सिद्ध करता है कि अनूप–अशेष के नवगीत समकालीन दौर के यथार्थ को पूरी प्रामाणिकता के साथ दर्ज करने वाले जीवंत दस्तावेज़ हैं।

मुख्य शब्द :– नवगीत, अनूप–अशेष, समकालीन संवेदना, लोक–जीवन, महानगरीय बोध, प्रकृति, शिल्प–सौष्ठव।

प्रस्तावना :–

अनूप अशेष के नवगीतों में सामाजिक जीवन का प्रभाव सर्वत्र दिखाई पड़ता है। नवगीत में अनूठे भाषा–प्रयोग सामाजिक चेतना को रूपायित करते हैं, आम गरीब व्यक्ति अपनी गरीबी को समझता है और उस पर खीझकर रह जाता है। उसमें समाज को समझने और परखने की क्षमता है, परन्तु व्यवस्था ने उसे पंगु बना दिया है। अनूप अशेष इस चिंतन को नवगीत में उतारते हैं जिसमें तराशे हुए शब्द–प्रयोग विशेष प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

यथा –

बाँस का टूटा हुआ जंगला
फटी भीती
बन्धु!
हम यहीं रहते हैं।
यह घर
कि जैसे भूखे पेट का भूगोल
खिंचावों की लकीरें

DOI: 10.48175/IJARSCT-37656

जले चूल्हे की
पुरानी गंध
मन को कहाँ चीरें,
धूप में तपता हुआ पिंजड़ा
दाने बिना तीतल
बन्धु!
इनको हमीं सहते हैं।[1]

बाँस का टूटा हुआ जंगला, फटी हुई दीवारें, घर : भूखे पेट का भूगोल, धूप से तपते पिंजड़े में भूखा तीतल, इस वेदना को सहने के लिए भी साहस चाहिए। कवि इसे सहता है, झेलता है, यही उसकी सामाजिक चेतना का ही स्वतंत्र रूप है।

अनूप–अशेष स्वयं पर राम मनोहर लोहिया का प्रभाव स्वीकार करते हैं तथा समाजवादी आन्दोलनों के सिलसिले में लगभग एक वर्ष का समय कारागार में व्यतीत कर चुके हैं। इसका अर्थ यह है कि उनकी सामाजिक चेतना किताबी नहीं है, भोगी और परखी हुई है। इस बात को उनके नवगीत कथ्य को धरातल पर दिखाई पड़ते हैं।

अनूप–अशेष की सामाजिक चेतना का सशक्त पहलू भौतिक परक चेतना है। इनके नवगीत नैतिकता के लिए तड़पते हुए प्रतीत होते हैं। उनमें दर्द है, पीड़ा है, जो भौतिक आचरणों की देन है। यह अनैतिकता शासन की भी, असामाजिक तत्वों की भी है और मानव– मूल्यों के हत्यारों की भी है।

"चिड़िया के बोल
दर्द की नई
इबारत
बौने घुटने मोड़
बाँचते
ठण्डा भारत
फन के नीचे बीन
रात का
डसा सबेरा।"[2]

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि नवगीतकार अनूप अशेष ने 'सबेरा' को नैतिकता का और 'रात' को अनैतिकता का प्रतीक रूप में वर्णन किये हैं। सामाजिक जीवन में प्रतिदिन ये प्रतीकों का साक्षात्कार होता है। इसी प्रकार 'फन के नीचे बीन' भी अनैतिक आचरण वालों के अधिकार में बीन अर्थात् सुख–सम्पत्ति का होना रूपायित होता है। इस प्रकार के अन्य उद्धरण–

"देहरी–देहरी लोटे अजगर
सुने मुडेरी कांव
ठण्डा पानी
पेट बजाता
गाँव,

झरी बस्तियाँ दिन में
धुन–धुन।''[3]

'अजगर' तो सामाजिकता अनैतिकता का प्रतीक हैं, 'मुडेंरी पर काँव' सुखद भविष्य की आशा का संकेत है। पेट बजाता गाँव में अनैतिकता का दुष्परिणाम घोषित हो रहा है और बस्तियों (गरीबों) का ऋण में धुन–धुन कर झर जाना उसकी, परिणति को रूपायित कर रहा है। प्रयोगों की नवीनता और मौलिकता ने भाव–बिम्बों को आकर्षक, प्रभावी और जीवन्त बनाने में पूरा सहयोग दिया है।

अनूप–अशेष एक ग्रामीण पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखते हैं एक ऐसे नवगीतकार है जिनका जन्म गाँव की सुगंधित माटी में हुआ, लालन–पालन ग्रामीण स्वच्छंद वातावरण में हुआ है। जब गीत अपने चरम पर थे तो उनमें नवीनता का रूप निर्माण करने में नवगीत का जन्म होकर साहित्य सर्जन में प्रभावी रूप से दिखाई देने लगा।

व्यक्तिगत रूप से नवगीतकार अनूप–अशेष जी ने अपने नवगीत में अपने अनुभवों को समाहित किया है। बघेलखण्ड की पावन धरा में जन्म लेने के कारण सर्वप्रथम बघेली में नवगीत लिखने वाले कवि हैं जो कि भारत वर्ष में बघेली के प्रथम नवगीतकार कहे जाते हैं।

अनूप अशेष ने अपने जीवन में अनुभव के आधार पर ही लेखन किया है। शहरी जीवन की दिक्कतों को देखकर कवि ने ग्रामीण जीवन को सर्वोपरि माना है। जैसे– नवगीत–

''घर की किल्लत
भूख, बिमारी,
हँस कर सहि जाना,
भैया,
शहर नहीं जाना।''

खेत खलिहानों के सदैव समीप रहने के कारण सुबह से कौअे का बोलना, सूरज का निकलना, गाँव के लोगों को घर से काम के लिए घर से निकलना तथा एक समूह में गाँव के गीत गाना व खेतों में काम करने की थकान को खत्म कर देने वाला मनोहरी गीत गाना। इन सभी को अनूप अशेष ने व्यक्तिगत अनुभवों को नवगीत में लिखा है।

जैसे– ''धान के खेतों में ठहरी–सी
अगॅडाई
गंध भरी यादों में
रूप की,
आरती उतार रही थाल में
सगुन भरी
पलकों की छाँव।''[4]

आमतौर पर अगॅडाई या रूप की प्रासंगिकता आने पर कवि भटक जाते हैं और ऐसे प्रसंगों में कामाशक्ति बढ़ाने वाले चित्र प्रस्तुत करने लगते हैं। अनूप जी ने इन्हीं अनुभवों, कलाओं की अपनी व्यक्तिगत चेतना को संयत और पवित्र रखा है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, July 2026
Impact Factor: 8.2

संवेदना को परिभाषित और व्याख्यायित करते हुए दर्शन कोश में कहा गया है कि 'संवेदन एक प्राथमिक मानसिक परिघटना, जो वस्तुगत जगत की वस्तुओं के मनुष्यों तथा पशुओं की ज्ञानेन्द्रियों पर प्रत्यक्ष प्रभाव के फलस्वरूप उत्पन्न होती है और जो स्वयं वस्तुओं में अन्तर्निहित गुणों में अवबोधित की जाती है। पर्यावरण के विविध कारण ज्ञानेन्द्रियों पर प्रभाव डालते हैं वहाँ केन्द्रित होकर फिर विद्युत–रासायनिक आवेगों के रूप में तंत्रिका के रास्ते से मस्तिष्क को स्थानान्तरित हो जाते हैं, जहाँ संवेदन पैदा होता है।

अनूप–अशेष व्यक्तिगत अनुभवों का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि जो वस्तु या घटना के अनुभव के रूप में मानव मस्तिष्क में अवतरित अथवा प्रक्षेपित होती है। मानव किसी वस्तु को देखकर मुँह में पानी भर लाता है, किसी वस्तु को देखकर उदास हो जाता है, किसी को देखकर क्रोध दिखाने लगता है और किसी को देखकर उसे कंठ लगाने की बात सोचने लगता है। भिखारी का भीख डालना भी एक मानवीय संवेदना का ही पर्याय है।

स्वाभाविक क्रिया होने के नाते यह कहा जा सकता है कि हर व्यक्ति संवेदनशील होता है। यह सच भी है परन्तु फिर भी व्यक्ति–व्यक्ति का अपना अनुभव होता है। रास्ते में पड़े हुए असहाय घायल को तड़पते देखकर आगे बढ़ जाते हैं, परन्तु सैकड़ों में एक ऐसा भी आता है जो उस घायल को अपने व्यय से किराये पर गाड़ी लेकर डॉक्टर के पास या अस्पताल में ले जाता है। इस संवेदन का उल्लेख नवगीतकार ने अपने नवगीतों में किया है।

अनूप–अशेष का मानना है कि सांस्कृतिक–जीवन, बोध और सामाजिक विकृतियों छन्दों के सामर्थ्य से बाहर है, गीत के इस सांस्कृतिकता का विकास एवं संयमित स्वरूप को किसी भी नाम से सम्बोधित किया जाये तो उनमें नवीनता अवश्य परिलक्षित होती है।

अनूप–अशेष का सम्पूर्ण जीवन संस्कृति से भरा हुआ है। उन्होंने अपनी पैनी निगाह से अपनी रचनात्मकता को आंचलिक संस्कृति से जोड़कर एक नई दिशा दी है। कवि काव्य रचना करते समय अंचल से जुड़ी हुई छोटी से छोटी बातों का ध्यान रखे हैं। वे सामाजिक परिवेश और पारिवारिक ताना–बाना जिन अंतः सूत्रों से नियोजित होता है। वे हमारी परम्परा के अंग हैं। मनुष्य की मेघा और संस्कारों ने परस्पर साहचर्य युक्त जीवन की जो प्रणाली विकसित की है उसके एक से एक सुंदर दृश्य नवगीत में दिखाई देते हैं।

'गाँव हमारा
अम्बा बाबू की आशीषों का
हंसी–ठिठोली
पीहर–सासुर
चेहरों शीशों का।'[5]

कवि की सांस्कृतिक चेतना गाँव की भावभूमि से बंधी हुई है। उनके काव्य में गाँवों का सुन्दर चित्र एवं छोटे शब्द जैसे– 'पीहर–सासुर' 'अम्मा–बाबू', 'हँसी–ठिठोली' आदि के प्रयोगों के माध्यम से कवि के सांस्कृतिक अनुराग का पता चलता है और यही अनुराग और स्नेह उनके काव्य शिखर को ऊँचाइयाँ प्रदान करता है। उन्होंने नवगीतों में लोकपर्व सम्बद्ध संस्कृति और विरासत उजली याद के रूप में स्मरण किये गये हैं, किन्तु समकालीन जीवन की यांत्रिकता और आपाधापी के बीच आए त्योहारों के आयोजन के छात्र को गहन पीड़ा के साथ भी उकेरा गया है।

अनूप–अशेष के नवगीतों में सांस्कृतिक जीवन बोध जो गाँवों के मधुर सांस्कृतिक एवं पारम्परिक त्योहारों का चित्रण मिलता है।

'वे बैठकें गाँव की हलचल
सूत बुने त्यौहार
तिथि त्यौहार पान बीड़े
दिन रंगरेज के तार'

आंचलिक सांस्कृतिक वृत्त में मनुष्य–जीवन अपेक्षाकृत अधिक वैविध्य, विस्तार व गहराई के साथ दिखाई देता है। वहाँ संस्कारों व मूल्यों के प्रति भी आस्था एवं दृढ़ता मिलती है जिसे कभी–कभी रुचि का अंध पोषण भी कहा जा सकता है। जो भी हो, किसी भी राष्ट्र समाज का ग्रामीण व जनपदीय जीवन–काव्य वस्तु के लिए व्यापक संभावनाएँ, प्रेरणाएँ और जब ऊर्जा लिए होता है और अक्सर जब किसी काव्य धारा में ठहराव, क्लासिकी एकरसता, ठंडेपन की ऊब आने लगी है कवियों ने लोक जीवन से नया उन्मेष पाया है।

नवगीतकार अनूप अशेष के इस कथन को अनुभूत साक्ष्य माना जा सकता है। कविता जहाँ ठहरने या स्वयं को दुहराने की स्थिति में पहुँचने लगती है तो उसे लोकपक्ष की ओर, लोकगीतों की ओर देखना पड़ता है। आज की वादग्रस्त प्रतिबद्धता के छद्म आयातित मुहावरों वाली कविताओं के बीच नवगीत उसी गंध के साथ उपस्थित है। गाँव की मिट्टी की गंध जो अनूप के काव्य में रची और बसी है।

अनूप अशेष की पंक्तियों –

'हंसों की पांत पंख छोड़ गयी
याद रहा गाँव
धूल पहिये की
यह यात्रा–कथा
शंख फोड़ गयी'

नवगीतों के संदर्भ में अनूप–अशेष 'लौट आयेंगे सगुन पंछी' की आश्वस्त देती और 'वह मेरे गाँव की हँसी थी' का बयान करती...... अनेक रचनाएँ लिखी गयी हैं जिनमें लोकरंग के प्रति, मुग्धता की सीमा तक आकर्षण है। गाँव का लोकरंग चना चबैना, खेतों की पूजा परछन, बिरहा तानों व पीपल बरगद तथा नीम छेहेरी की दृश्यावली भर नहीं, वह पान का प्रबंध सा है आदि सुन्दर झाँकियों के 'अनूप अशेष' के काव्य में दर्शन होते हैं। शहर केन्द्रित राष्ट्रीय विकास के ढाँचे में गाँव की नियति सोयी रही है। नवीनता की बहुतायत के कारण गाँव के परम्परागत पेशों के अवसर समाप्त होने लगे। लोहार, बढ़ई, मोची तथा नाई तक रोजगार पाने की तलाश में शहर की ओर जाने लगे। मध्यम वर्गीय परिवार के लोग रोजी–रोटी कमाने शहर जाने को विवश तो हुए क्योंकि जीविकोपार्जन के लिए इस विवशता के अलावा कोई विकल्प न था। शरीर तो शहर प्रवासी हुआ किन्तु मन तो गाँव की प्रकृति से अभी भी विधा हुआ है, जो स्मृति के वातायन से जब तब सीज उठता है।

'होड आये थे जिसे हम/खेत में/पक गई होगी सुनहली
धान/महकती होगी हवा घर–गाँव की/हर देह।
और हँसिये को/हुआ होगा/कुँआरी उँगलियों का लेह।'

ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, July 2026
Impact Factor: 8.2

यहाँ पर अनूप–अशेष ने प्रकृति के माध्यम से आंचलिकता का गहरा उद्घाटन किया है। प्रकृति के दीर्घ सान्निध्य में उसका व्यक्तित्व विकसित और संस्कारित हुआ है। प्रकृति पदार्थों से उसने संवेदना का विस्तार पाया है। खेत की बुआई, कटाई, लहलहाते खेत, खलिहान में रखा अन्न भण्डार, पेड़ों की श्रृंखला के बीच से हवा का सरसराना, पखेरुओं का उल्लास, जीवन का नर्तन–उत्सव उसने जिया है।

आंचलिक, सांस्कृतिक भाषा संस्कार वैसे तो अनूप–अशेष का वैशिष्ट्य है किन्तु ठाकुर प्रसाद सिंह, अनूप अशेष में यह बात विशेष रूप से परिलक्षित होती है।

नवगीतकार अनूप–अशेष के नवगीतों से लोक जीवन का प्रभाव में राग–अनुराग की कई रंगोलियाँ रची गई हैं। यद्यपि नवगीतों का मूल स्वर लोक मानस की अभिव्यक्तियों का रहा है फिर भी अनूप–अशेष की रागात्मक अभिव्यक्तियाँ एवं इनका प्रभार कम नहीं है। लोक लय की प्रतिध्वनियाँ, परिवेश, जन्म, समाज–बोध में अधिक आवेगी स्वरों से मानवीय संवेदना को उजागर करने की अधिक सामर्थ्यवान कविता के संसार में विस्तार पाती है। वहीं पर वैयक्तिक और सांस्कृतिक अनुराग का लेखांकन नवगीतों का अभिप्रेतन न होते हुए भी कम राग में और व्यंजक नहीं है।

अनूप–अशेष जी नवगीत संग्रहों में नवगीतों के अनेक शीर्षक जैसे 'दिन बसंत हुए', 'इध हँसी हँसकर', 'मन असाढ़ में', 'कनेर के फूले', 'बसंत बाजार में, आदि–आदि अनुराग की एक रंगीन झाँकी प्रस्तुत करने के साथ–साथ स्मृतियों के तहखानों को खोलने में सखम दिखाई पड़ते हैं। उदाहरण के लिए नवगीतों के कुछ अंश यहाँ प्रमाण में उपस्थित है।

'फूल कनेरों के बीच संत हुए
हू के अंधेरों को
दिन बसंत हुए।
देह कोपल–सी
गंध की बाँहें
उंगलियों में लिपटती
आती हैं।
साथ मालकिन के
जोगिया राहें
रास होता रहा पलाशो का
आलता पाँव
मन अनंत हुए।
प्रेम पत्रों के डाकिये पाँखी
क्वाँरी पलकों में
बंद कंत हुए।[6]

इसी क्रम में अनुराग विंधा हुआ, रूमानियत से लबरेज 'फागुनी निबंध मेरा गाँव' शीर्षक नवगीत कवि की दृष्टि से एक विलक्षण सौंदर्य बोध के यथार्थ से संपृक्त दिखाई पड़ता है जहाँ गाँव मिश्रित होते हुए भी मन के अनुबंध का पारदर्शी बिम्ब ग्रहण करता चलता है। इस गाँव के सौंदर्य बोध में कच्ची उम्र प्रौढ़ अनुराग को व्यंजित करती गीत पंक्तियों में बसा दिखाई पड़ता है।

कच्ची सी उम्र प्रौढ़ अनुराग को व्यंजित करती गीत पंक्तियों में बसा दिखाई पड़ता है। कच्ची सी उम्र में पकी वाली धूप की प्रौढ़ता, आँगन में खनकने वाले कंगन, गुलमोहर के फूल, आँखों में स्मृतियों की पगडंडी सब कुछ एक साथ रूपायित हुई हैं। एक उदाहरण में 'दृष्टव्य' है–

फागुनी–निबंध मेरा गाँव
मन का अनुबंध
मेरा गाँव।
महुए की कूच
गुलमोहर के फूल,
आँख भरी पगडंडी
गमछे में धूल।
झउए की गंध मेरा गाँव
मन का अनुबंध मेरा गाँव।।
कच्ची सी उम्र
पकी वाली सी धूप,
आँगन में खनके
कंगन भर सूप।[7]

नवगीतों के छोटे से कलेवर में अनुराग परक रचाव एक जटिल काम है। फिर भी अनुराग की स्मृति जन्य विराटता यत्र–तत्र दिग्दर्शित होती चलती है। अशेष के नवगीतों में जीवन के अनेक क्षेत्रों के अनुभव पिरोये गये हैं। इनमें भारतीय मानव का रसग्राही हृदय लुप्त होती संवेदना और रागात्मक सरोकार नवगीतों के केन्द्रीय सूत्र हैं। उनके अनेक नवगीतों में जीवन का आदिम रस विद्यमान दिखाई पड़ता है। सौन्दर्य, उल्लास और रागात्मक विश्वास के अनेक क्षणों समुच्चय गीतों की प्राणवस्तु है। वहाँ मीठे अनुभवों और रागरंगों के अनेक संदर्भ सहज ही उपलब्ध हैं। अनुराग की स्पर्श जन्य अनुगूँजें अनूप के गीतों की विशेष निधि हैं।

अनूप–अशेष का जन्म गाँव में हुआ था इसलिए बचपन की अनोखी स्मृतियाँ, ग्रामीण परिवेश में पालन–पोषण तथा गाँव की माटी की सुगंध भरा पूरा जीवन है। इसलिए अनूप जी की साहित्यिक धरोहर में ग्रामीण जीवन का पूरी तरह वर्णन मिलता है।

अनूप–अशेष की कविता में ग्रामीण और देशी जिंदगी का ठाठ उस क्रम में परिवर्तित होता है। साहित्य का मूल सम्बन्ध मनुष्य से है उसे केन्द्र में रखकर चलना ही साहित्यकार का ध्येय होता है। आज सारा संकट मनुष्य की मनुष्यता के अंत होने का है। कालजीवी साहित्यकार अपनी रचना से मनुष्य में मनुष्यता को बचाए रखने की पुरजोर कोशिश करता है। हिन्दी कविता की गीत परम्परा को विकास देने वाला नवगीत भी इस प्रयास में निरन्तर रहता है कि प्रकृति एवं प्रकृति प्रदत्त नवगीत की एक अनोखी छवि निखरती है।

मूल्यों के लिए चिन्तन नवगीतकार ने ग्रामीण, सामाजिक यथार्थ जीवन के आयातित अनुभवों की अपेक्षा अपनी मिट्‌टी से रिश्ता जोड़, गाँव, घर, गाय, गोबर की गंध को बड़े ही मनोहारी रूप से चित्रित किये हैं। गाँव की गायों की गाय शाला, बछड़ों की कतारबद्ध उछल– कूद, गायों का समूह में रंभाते हुए घर से चलते जाना एवं शाम को हुँकारते हुए घर वापस आना, इन सभी दृश्यों को नवगीतकार अनूप–अशेष ने वर्णन किये है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, July 2026
Impact Factor: 8.2

नवगीत एक ऐसा ग्रामीण–सामाजिक और यथार्थवादी काव्य है। यहाँ व्यक्ति मानव को ग्रामीण सामाजिक मानव के रूप में देखा और प्रस्तुत किया गया है। अनूप–अशेष की कविता में यह व्यक्ति घर से घर नहीं है या अपने घर, पड़ोस, गाँव घर, आँगन गाँव–पड़ोस में रचा बसा है। उसकी देह अपनी खेतों की अनूप–अशेष की रचनाओं में गाँव के विविध दृश्यों का वर्णन किये हैं, उनकी रचना गाँव के रहने वाले ग्राम वासियों के सुख एवं दुःख को भली भाँति प्रस्तुत करने में समर्थवान है। गाँव की हँसी–गाँव के मानसिक सौन्दर्य बोध का उत्कृष्ट रूपायन करती है। साथ ही वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य के चित्रों को स्मृति के धरातल पर बार–बार उभारती है। गाँव की हँसी वन स्वरूप भावात्मक अधिक है; तथा इसकी मानवीय आकृति के रूप में कोई परिचय नहीं दिया गया है। इसका भावात्मक रूप प्रस्तुत करने की दृष्टि से कवि ने आरंभ में भूमिकात्मक पंक्तियाँ मिलती हैं।

'हाशिए पर बाँटती हुई मनुष्य की संवेदनशीलता
टूटते–उजड़ते गाँव–कस्बे।
मानव मूल्यों कह लीलने शहर, राजधानियाँ।
मजदूर, किसान, वनवासी।
आग की लपटों में घिरी युवा पीढ़ी।
इन सभी के होठों पर जो थी
वह मेरे गाँव की हँसी थी।'[8]

अनूप–अशेष की ग्रामीण परिवेश की मार्मिक प्रस्तुति सभी को एक अलग अनुभव कराती है। गाँव में किसान, मजदूर एवं वनवासी के जीवन यापन में तो तीन चीजों की तो उपयोगिता एवं आवश्यकता नितांत बनी रहती है। रोटी, कपड़ा और मकान की व्यवस्था बनाने में उनकी पूरी क्षमता लगी रहती है। साथ ही अपने साथ जानवरों का भी पालन पोषण एक अलग सामाजिक हृदय का अनुभव कराता है।

गाँव के गाय का गोबर की पंक्तियाँ –

गोबर की गंध
धुली हाथों से
रिश्तों के निर्मित वीरानों में,
आँगन के काटे हैं धार पर
देखता रहा टोला चैन से
उंगली के टुकड़े
झटकार 'कर'[9]

इन पंक्तियों में जिस मानसिक सौन्दर्य को घुलते हुए तथा तेज स्वार्थी धार से जिस 'आँगन' बोध को टुकड़े–टुकड़े करते हुए चित्रित किया है, वही गाँव की वास्तविक हँसी थी। आज उपभोक्तावादी विषाक्त संस्कृति ने उसको न जाने कहाँ छिपा दिया है। कवि की इस कृति की यही मूल चिंतनधारा है जिसे विविध बिम्बों में रूपायित किया है। आज का गाँव कवि की दृष्टि में –

एक मुट्ठी रेत गीली पलक
दो बूँदें
साथ में लेकर जिए

हर गाँव। –

इस प्रकार कवि अनूप–अशेष को अपनी कृति 'वह मेरे गाँव की हँसी थी' में गाँव की मूल्यांकन संस्कृति के बिम्ब उभारते हुए वर्तमान में उसकी दुर्दशा का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया है तथा हर पंक्ति मानवीय चेतना को कहीं न कहीं हिला देती है। गाँव के विविध तीज, त्योहारों का भी चित्रण किया है। 3 गाँव के भोले–भाले लोग किस तरह से अपनों से आपस में ऐसे गले मिलते हैं और खुशियाँ मनाते हैं। सुख–दुःख को बराबर बाँटते हैं। सभी नर–नारी साथ में एक समान परिस्थितियों में रहते हैं। उनकी एक छोटी सी उपलब्धि भी सभी के लिए गर्व की बात हो जाती है।

कवि अनूप–अशेष ने ग्रामीण जीवन के उन अद्भुत दृश्यों का वर्णन किये हैं जिनका कि अन्य रचनाओं में नहीं मिलता है। गाँव के बड़े–बूढ़े पेड़ भी हमारी संस्कृति की झलकियाँ प्रस्तुत करती हैं। पेड़ों के पत्तों का पतझड़, नयी–नयी कोपलों का आना एवं बौरों से सम्पूर्ण वातावरण के सुगंध का मदमस्त माहौल एक अनोखी छटा को दिखाता है। गाँव के खेतों में फसलों की बुआई तथा लहलहाती छटा को देखकर मन मुग्ध हो जाता है।

छोड़ आए थे जिसे हम खेत में
पक गई होगी सुनहली धान,
महकती होगी हवा घर–गाँव की
हर–देह
और हँसिये को
हुआ होगा
कुँवारी उंगलियों का नेह

वस्तुतः नवगीतकार अपने प्रकृति परिवेश का तटस्थ दृष्टा भर नहीं है, वह उस प्रकृति में उसी तरह अन्तर्भुक्त है जिस भाँति वह अपने परिवार के सदस्यों के साथ आत्मवत है। ग्रामीण परिवेश प्रकृति के दीर्घ सान्निध्य में विकसित एवं संस्कारित हुआ है।

खेत की बुवाई, कटाई, लहलहाते खेत, खलिहान में रखा अन्न भण्डार, पेड़ों की श्रृंखला के बीच से हवा का सरसराना, पखेरूओं का उल्लास, जीवन का नर्तन–उत्सव आदि सारे दृश्यों का वर्णन अनूप–अशेष ने किया है।

माती थाप हवा का पड़ती
पेड़ों की बज रही ढुलकिया
जी–भर फाग पखेरू गाते
ढरकी रस की राग–गागरिया
मैंने ऐसा दृश्य निहारा
मेरी रही न मुझे खबरिया।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अनूप–अशेष के नवगीत समकालीन हिंदी कविता की एक अमूल्य धरोहर हैं, जो आज के मनुष्य की आंतरिक और बाह्य दुनिया का वास्तविक आईना प्रस्तुत करते हैं। उनके गीतों में संवेदना का कोई एक इकहरा

आयाम नहीं है, बल्कि वह बहुआयामी और बहुरंगी है। उनके गीतों की संवेदनात्मक उपलब्धियों को निम्नलिखित बिंदुओं के तहत समेटा गया है– यथार्थपरक आधुनिक बोध–उन्होंने अपने गीतों में न तो अतीत का अति–रोमांटिक विलाप किया है और न ही भविष्य की अंधी दौड़ का समर्थन। वे वर्तमान समय की क्रूर सच्चाइयों, बाज़ारीकरण और यंत्रवत होती जा रही जिंदगी को पूरी ईमानदारी से उजागर करते हैं। सहानुभूति और जिजीविषा–उनकी संवेदना का केंद्र बिंदु 'आम आदमी' है। मध्यवर्गीय और निम्न–मध्यवर्गीय समाज के सुख–दुख, अभावों और उन अभावों के बीच भी जीने की ललक को उन्होंने अत्यंत मार्मिक ढंग से पिरोया है। परंपरा और आधुनिकता का संतुलन : अनूप–अशेष के गीतों में जहाँ एक ओर लोक–जीवन की सोंधी महक और मिट्टी से जुड़ाव दिखता है, वहीं दूसरी ओर समकालीन वैश्विक चेतना भी मुखर होती है। यह संतुलन उनके नवगीतों को प्रासंगिक बनाए रखता है। अद्वितीय शिल्प और लयात्मकता – वैचारिकता के बोझ तले दबे बिना, उनके गीतों की गेयता (लय) और नए प्रतीकों का चयन शिल्प के स्तर पर नवगीत के विस्तार को एक नई दिशा देता है।

अंततः, अनूप–अशेष के नवगीतों में संवेदना का फलक अत्यंत व्यापक है। उनके गीत केवल मनोरंजन या छंद–पूर्ति के साधन नहीं हैं, बल्कि वे समाज को जगाने, चेतना को झकझोरने और मनुष्यता को बचाए रखने का एक सार्थक काव्यात्मक प्रयास हैं। समकालीन नवगीत के इतिहास में उनके अवदान को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

संदर्भ स्रोत :–

1 अनूप अशेष – पृ0 15–16
2 हम अपनी खबरों के भीतर, पृ0 67
3 वह मेरे गाँव की हँसी थी; अनूप अशेष – पृ0 46
4 अनूप अशेष – हम अपनी खबरों के भीतर, पृ0 58
5 अनूप–अशेष – लौट आयेंगे सगुन पक्षी, पृ0 102
6 सफर नंगे पाँव का – अनूप अशेष– पृ0 9
7 अक्षत (अनूप अशेष विशेषांक), पृ0 4
8 वह मेरे गाँव की हँसी थी – अनूप अशेष पृ0 5
9 वह मेरे गाँव की हँसी थी – अनूप अशेष पृ0 33